

=====

AVYAKT MURLI

18 / 01 / 75

=====

18-01-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

मधुबन रूपी परिवर्तन भूमि पर पवित्रता का वरदान देने वाले शिव बाबा सेवा-केन्द्रों से आये हुए वत्सों से बोले -

मधुबन की क्या महिमा करते हो? कहते हो कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। स्वयं में व अन्य में वरदान का अनुभव करते हो? यहाँ आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना। अब क्या परिवर्तन करना है? जो विशेष कमजोरी व विशेष संस्कार समय-प्रतिसम य विघ्न रूप बनता है, ऐसा संस्कार व ऐसी कमजोरी यहाँ परिवर्तन करके जाना है। तभी कहेंगे कि स्वयं में परिवर्तन लाया। विशेष उमंग, उत्साह और लगन से यहाँ तक पहुँचते हो तो यहाँ मधुबन में अपनी लगन को ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएँ।

मधुबन को कहा जाता है - अश्वमेघ रूद्र-ज्ञान महायज्ञ। यज्ञ में क्या किया जाता है? स्वाहा किया जाता है। आप बच्चे भी अमृत वेले उठ रोज यज्ञ रचते हो लगन की अग्नि का। जिस लगन रूपी अग्नि में अपनी कमजोरी स्वाहा करते हो। लेकिन यह महायज्ञ है। मधुबन में आना माना महायज्ञ में आना। मधुबन को क्यों महायज्ञ कहा है? क्योंकि यहाँ अनेक आत्माओं की लगन की अग्नि का समूह है। तो इसका लाभ उठाना चाहिए न। जैसे कई बार स्वतः प्रतिज्ञा करते हो, संकल्प लेते हो, वैसे ही मधुबन में आप भी ऐसी प्रतिज्ञा करते हो, संकल्प लेते हो? क्या समझते हो? क्या ऐसी आहुति डालते हो जो आगे के लिए समाप्त हो जाये? महायज्ञ में महा आहुति डालनी चाहिए। साधारण आहुति नहीं। अनेक आत्माओं के लगन की अग्नि की सामूहिक आहुति डाली है? यहाँ से जाते हो, डाल कर जाते हो या अब वापिस ली है या सोचते हो कि किस प्रकार के तिल व जौ डालें? यह चेक (जाँच) करते हो कि जितनी बार महायज्ञ में आते हो तो महायज्ञ में आहुति डालते हो।

सम्पूर्ण समर्पण हुए हो या वापिस ले जाते हो? आहुति सम्पूर्ण समर्पण हो जाती है या रह जाती है? क्या ऐसा तो नहीं सोचते कि यह पुरानी दुनिया में काम आयेगी? ऐसा होता है, कमजोर आदमी हाथ खींच लेते हैं। अगर आहुति डालने वाले कमजोर हों तो सेक (ताओ) होने के कारण, आधी आहुति बाहर, आधी अन्दर रह जाती है। यहाँ भी सोचते हैं कि करें या न

करें? होगा या नहीं होगा; कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे? तो बुद्धि रूपी हाथ आगे-पीछे करते रहते हो। इसलिए सम्पूर्ण स्वाहा नहीं होते हो; किनारा रह जाता है, बिखर जाता है। जब सम्पूर्ण स्वाहा नहीं तो सम्पूर्ण सफल नहीं होता। सोचते ज्यादा हो, करते कम हो। तो फल भी कम मिलेगा। पहले हिम्मत कम है, संकल्प पाँवरफुल नहीं है, तो कर्म में बल भी नहीं होगा और इसीलिए फल भी कम ही होगा। फिर क्या करते हो? आधा यहाँ आधा वहाँ बिखेर देते हो। तो सफलता नहीं हुई न! अभी आप सब को रिजल्ट क्या हुई? सफलता हुई? यज्ञ में सम्पूर्ण आहुति रही या बिखर गई। आप सबकी अब की रिजल्ट बिखरना - माना रह गया है। अभी तो जो सोचना है वह प्रैक्टिकल में भर करके जाना है कि आज से यह कमज़ोरी फिर नहीं आयेगी। सम्पूर्ण समर्पण करने का साहस है या कम है? विनाश न हुआ तो? स्वर्ग न आया फिर? पहुँचेंगे या नहीं? फिर लोग क्या कहेंगे? ऐसे होशियार नहीं बनना। सब की यही हालत है! सहज हाथ आगे बढ़ाते हैं। सेक आता है तो हाथ खींच लेते हो। हिम्मत आती है, थोड़ा-सा विघ्न आता है तो कदम पीछे चल पड़ते हैं। ऐसों की गति क्या होगी? गति-सद्गति को भी तो जानते हो न?

नॉलेजफुल होते हुए अगर कोई न करे तो क्या कहेंगे? इनको वापिस लिया तो क्या गति होगी? जान-बूझ करके भी अगर न करे तो क्या कहेंगे? लाईट रूप और माईट रूप होते हुए भी क्यों नहीं कर पाते हो? कारण क्या है?

नाँलेज तुम्हारी बुद्धि तक है; समझ तक है। ठीक है - जानते हो, लेकिन नाँलेज को प्रैक्टिकल में लाना और समाना नहीं आता है। भोजन है, खाते भी हैं। परन्तु खाना अलग बात है, खा कर हजम करना अलग बात है। समाते नहीं हो, हजम नहीं होता, रस नहीं बनता और शक्ति नहीं मिलती। जीभ तक खा लिया तो रस नहीं बनेगा, शक्ति नहीं मिलती। समाने के बाद ही शक्ति का स्वरूप बनता है। समाया नहीं तो जीभ-रस है। समाया तो शक्ति है। सुनने का रस आया, समझ में आया, समझा किन्तु समाया नहीं, प्रैक्टिकल में नहीं लाया। जितना धारणा में आता है, संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफलता का स्वरूप दिखाई पड़ता है। नाँलेजफुल का अर्थ क्या है? नाँलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नाँलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं? तो धोखा खाने की बात रहेगी? आँखे और वृत्ति धोखा नहीं खायेंगी जब आत्मा में नाँलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नाँलेज समा जाती है। जैसे भोजन से शक्ति भर जाती है तो शक्ति के आधार से काम होता है। अभी नाँलेज को समाना है। हरेक कर्मेन्द्रियों को नाँलेजफुल बनाओ।

हर वर्ष आते हो, कहते हो कि अभी करूंगा। वायदा करके जाते हो। अभी कब पूरा होगा? क्या कारण है? जो तुम सोचते हो और जो कर्म करते हो, उसमें अन्तर क्यों? कारण क्या? सोचते हो फुल करने की बात, और होती है आधी - इतना अन्तर पड़ने का कारण क्या है? प्लान भी खूब रचते हो,

उमंग भी खूब लाते हो और समझ कर वायदा करते हो। सब बातें आयेंगी ही, लेकिन प्रैक्टिकल और समझ में अन्तर आ जाता है - इसका कारण क्या है? संस्कारों की आहुति करके जाते हो, फिर सब कहाँ से आया? स्वाहा करके जाते हो फिर क्यों आता है? देह-अभिमान, अलबेलापन वापिस क्यों लौट आता है, कारण क्या है? कारण है कि संकल्प करके जाते हो स्वाहा करने का, लेकिन संकल्प के साथ-साथ (जैसे बीज बोते हो, बाद में सम्भाल करते हो) परन्तु इसमें जो सम्भाल चाहिए वह सम्भाल नहीं रखते हो। समय-प्रमाण उनकी आवश्यकता रखनी चाहिए, आप बीज डाल कर अलबेले हो जाते हो। सोचते हो कि बाबा को दिया, अब बाबा जाने, यह बाबा का काम है। आप उसकी पालना नहीं करते हो। तो वाचा और मन्सा पर अटेन्शन चाहिए। जैसे बीज बो कर पानी डालते हो कि बीज पक्का हो जाये। बीज को रोज-रोज पानी देना होता है, वैसे ही संकल्प रूपी बीज को रिवाइज करना है। उसमें कमी रह जाती है और आप निश्चिन्त हो जाते हो - आराम पसंद हो जाते हो। आराम पसन्द के संस्कार नहीं, मगर चिन्तन का संकल्प होना चाहिए, एक-एक संस्कार की चिन्ता लगनी चाहिए। पुरुषार्थ की एक भी कमी का दाग बहुत बड़ा देखने में आता है। फिर हमेशा ख्याल आता है कि छोटा-सा दाग मेरी वैल्यू कम कर देगा। चिन्तन चिन्ता के रूप में होना चाहिए। वह नहीं तो अलबेलापन है। कहते हो, करते नहीं हो। जो पीछे की युक्ति है उसे प्रैक्टिकल में लाओ, आराम-पसन्दी देवता स्टेज का संस्कार है, वह ज्यादा खींचता है। संगमयुग के

ब्राह्मण के संस्कार जो त्याग मूर्त के हैं, वह कम इमर्ज होते हैं। त्याग-बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जायेगा - यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं। “जरूर करूंगा”, ये ब्राह्मणपन के संस्कार हैं। लौकिक पढ़ाई में जिसको चिन्ता रहती है, वह पास होता है। उसकी नींद फिट जाती है। जो आराम-पसन्द हैं वे पास क्या होंगे? अभी सोचते हो कि प्रैक्टिकल करना है। चिन्ता लगनी चाहिए, शुभ चिन्तन, सम्पूर्ण बनने की चिन्ता, कमजोरी को दूर करने की चिन्ता और प्रत्यक्ष फल देने की चिन्ता।

इस मुरली के विशेष ज्ञान-बिन्दु

1. मधुबन है अविनाशी रुद्र ज्ञान महायज्ञ। इस महायज्ञ में अपनी लगन को ऐसी अग्नि बनाओ जिस अग्नि में सब व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुये पुराने संस्कार बिल्कुल भस्म हो जायें।
2. बुद्धि में नॉलेज तो है लेकिन नॉलेजफुल नहीं बने हो। नॉलेजफुल का अर्थ है कि हर एक कर्मइन्द्रियों में नॉलेज समा जाये। तो जैसे भोजन खाने से, साथ ही समाने अर्थात् हजम करने से शरीर में शक्ति आती है वैसे ही तुम्हारी आत्मा शक्तिशाली बनती है।

3. जितना ज्ञान धारणा में आता है वह संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफलता का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

29-01-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

परखने की शक्ति के प्रयोग से सफलता

सर्व शक्तियों और वरदानों के दाता, शिव बाबा सच्चे राजऋषि स्वरूप वत्सों के सम्मुख बोले -

आज की यह सभी राजऋषियों की सभा है। जैसे मधुबन शब्द दो बातों को सिद्ध करता है - एक मधुरता को और बेहद की वैराग्य वृत्ति को, ऐसे ही राज-ऋषि शब्द है जिसका अर्थ है - राज्य करने वाले। तो राजऋषि हैं - बैगर टू प्रिन्स । जितना ही अधिकार उतना ही सर्वत्याग। सर्व त्यागी, अर्थात् समय के ऊपर, संकल्प के ऊपर, स्वभाव और संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले। जैसे चाहे वैसे अपने समय, स्वभाव और संस्कार को परिवर्तन कर सकें अर्थात् जैसा समय, वैसा अपना स्वरूप व

स्थिति धारण कर सकें। ऐसे राज-ऋषि अर्थात् सर्वअधिकारी और सर्व त्यागी बने हो? जन्म लेते ही कर्म-प्रमाण, श्रेष्ठ स्वमान-प्रमाण राजऋषि का मर्तबा (पद) बापदादा द्वारा प्राप्त हुआ है ना? सर्व-अधिकारी बन गये हो या अभी बनना है? क्या समझते हो? आप सबका विशेष नारा कौन-सा है? जब जन्म-सिद्ध अधिकार है तो जन्म लेने से ही प्राप्त है - तब अधिकारी तो बन ही गये ना?

नाँलेजफुल अर्थात् मास्टर ज्ञान-सागर। जब मास्टर ज्ञान-सागर बन गये तो नाँलेज अर्थात् समझ से अधिकार प्राप्त होता है। समझ कम तो अधिकार भी कम। नाँलेजफुल तो हो ना? अब लास्ट स्टेज क्या है? उसको जानते हो? कर्मातीत बनने की स्टेज की निशानी क्या है? सदा सफलता-मूर्त। समय भी सफल, संकल्प भी सफल, सम्पर्क और सम्बन्ध भी सदा सफल - इसको कहते हैं सफलता मूर्त। ऐसे सफलतामूर्त बनने के लिए वर्तमान समय-प्रमाण विशेष कौनसी शक्ति की आवश्यकता है जिससे कि सब बातों में सदा सफलता मूर्त बन जायें? वह कौन-सी शक्ति है? सर्व शक्तियाँ प्राप्त हो रही हैं, फिर भी वर्तमान समय-प्रमाण विशेष आवश्यकता परखने की शक्ति की है।

अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आये हुए विघ्न, जो लगन में विघ्न बनते हैं, उन विघ्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा

वार होने से पहले ही उन्हें समाप्त कर देते हैं। इस कारण व्यर्थ समय जाने के बदले समर्थ में जमा हो जाता है। ऐसे ही सेवा में हर-एक आत्मा की मुख्य इच्छा और उसका मुख्य संस्कार जानने के कारण, उसी प्रमाण, उस आत्मा को वही प्राप्ति कराने के कारण सेवा में भी सदा सफल रहते हैं।

तीसरी बात यह है कि दूसरों के सम्बन्ध में आने का जो मुख्य सब्जेक्ट है, उसमें भी हर-एक आत्मा के संस्कार तथा स्वभाव को जानते हुए, उसी-प्रमाण उसे सदा सन्तुष्ट रखेंगे।

चौथी बात है समय की गति। किस समय कैसा वातावरण व वायुमण्डल है और क्या होना चाहिए - इसको परखने के कारण समय-प्रमाण ही स्वयं को भी और अन्य आत्माओं को भी तीव्र-गति में ला सकेंगे और जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने का उमंग और उत्साह भी भर सकेंगे तथा समय-प्रमाण नॉलेजफुल और लॉफुल या लवफुल भी बन तथा बना सकेंगे और इस प्रकार सदा सफल बन सकेंगे, क्योंकि कभी लॉफुल बनना है और कभी लवफुल बनना है, इसलिये यह परख होने के कारण सदा सहज ही सफल रहेगे।

ऐसे सफलतामूर्त के सामने प्रकृति व परिस्थिति भी दासी बन जाती है। अर्थात् वे प्रकृति और परिस्थिति के ऊपर सदा विजयी बनते हैं। वे प्रकृति व परिस्थिति के वशीभूत नहीं होते। ऐसे विजयी को ही सदा सफलता-मूर्त कहा जाता है। इसके लिए तीन स्वरूप से बाप की बात याद रखो। तीनों स्वरूप अर्थात् निराकार, आकार और साकार। जैसे तीन सम्बन्धों में सत्-बाप, सत्शिक्षक और सद्-गुरु की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो।

इन तीन स्वरूपों से विशेष तीन वरदान कौन-से हैं? निराकारी स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान कौन-सा है? कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान कौन-सा है? डबल-लाइट भव! डबल लाइट अर्थात् सर्व कर्म-बन्धनों से हल्के और लाइट अर्थात् सदा प्रकाश-स्वरूप में स्थित रहने वाले। तो आकारी स्वरूप का विशेष वरदान है-डबल लाइट भव! इससे ही डबल ताजधारी भी बनेंगे। साकार स्वरूप का विशेष वरदान कौन-सा है? साकार स्वरूप का विशेष वरदान है - साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव! ये तीन वरदान सदा स्मृति में रखने से सदा के लिये सहज ही सफलता-मूर्त बन जायेगे। समझा?

बापदादा से भी बच्चे शक्तिवान् हैं क्योंकि वे सर्व शक्तिमान् को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बने हैं। क्या वे ज्यादा शक्तिमान् नहीं हैं? सर्वशक्तिमान्

को सर्व-सम्बन्धों से अपना बना देना वा अपने स्नेह की रस्सी में बाँध लेना तो क्या ज्यादा शक्तिवान् नहीं हुए? बल्कि ऑथारिटी को वर्ल्ड सर्वेट बना देना-इसके निमित्त कौन? समीप व सहयोगी बच्चे।

ऐसे सर्व श्रेष्ठ सदा बापदादा को हर कर्म और हर कदम द्वारा प्रख्यात करने वाले, हर आत्मा को बाप के साथ मिलन मनाने के निमित्त बनाने वाले, सदा बाप और सेवा में लवलीन रहने वाले, लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले, साक्षात् बाप-समान बन सर्व को बाप का साक्षात्कार कराने वाले, ऐसे लवफुल और लॉफुल आत्माओं के प्रति बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

इस मुरली का सार

1. संगमयुग पर शिव बाबा द्वारा राजऋषि का पद प्राप्त होता है। राजऋषि अर्थात् जितना ही अधिकार उतना ही सर्व त्याग।
2. कर्मातीत बनने की स्टेज की निशानी है सदा सफलतामूर्त। समय भी सफल, संकल्प भी सफल, सम्पर्क और सम्बन्ध भी सफल। इसको कहते हैं सफलता मूर्त।

3. सफलता मूर्त बनने के लिये वर्तमान समय-प्रमाण विशेष रूप से परखने की शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति होने से आने वाले विघ्नों को पहले से ही जान कर उसको समाप्त कर अपनी शक्ति को व्यर्थ होने से बचा सकेंगे, हर मनुष्य की आवश्यकता को परख उसको संतुष्ट रख सकेंगे, समय व वायुमण्डल को परख पुरुषार्थ की गति तीव्र रख सकेंगे, नॉलेजफुल, लॉफुल और लव फुल का संतुलन रख कर ही सफलता को प्राप्त कर सकेंगे।

4. शिव बाबा के तीन स्वरूप से तीन विशेष वरदान प्राप्त होते हैं निराकार रूप कर्मातीत भव, आकारी स्वरूप से डबल लाइट भव जिससे डबल ताजधारी बनेंगे, साकारी स्वरूप से बाप समान निरहंकारी और निर्विकारी भव!

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- लाईट रूप और माईट रूप होते हुए भी क्यों नहीं कर पाते हो? कारण क्या है?

प्रश्न 2 :- देह-अभिमान, अलबेलापन वापिस क्यों लौट आता है, कारण क्या है? इसके संदर्भ में बापदादा ने क्या समझानी दी है ?

प्रश्न 3 :- "मधुबन और राज-ऋषि" यह दो शब्द क्या सिद्ध करता है?

प्रश्न 4 :- सफलतामूर्त बनने के लिये बापदादा ने क्या समझानी दी?

प्रश्न 5 :- नॉलेजफुल का अर्थ क्या है ?

FILL IN THE BLANKS:-

{ स्वाहा, परखने, वरदान, प्रकाश-स्वरूप, शक्ति, अग्नि, कर्म-बन्धनों, परिवर्तन, सफल, लगन, कमजोरियां, व्यर्थ संकल्प, संस्कार }

1 यहाँ आना अर्थात् _____ पाना, _____ करना।

2 मधुबन में अपनी _____ की ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस _____ में सर्व _____, सर्व _____, व सब रहे हुए पुराने _____ भस्म हो जाएँ।

3 जब सम्पूर्ण _____ नहीं तो सम्पूर्ण _____ नहीं।

4 डबल लाइट अर्थात् सर्व _____ से हल्के और लाइट अर्थात् सदा _____ में स्थित रहने वाले।

5 सफलता मूर्त बनने के लिये वर्तमान समय- प्रमाण विशेष रूप से _____ की शक्ति की आवश्यकता है।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- मधुबन को क्यों महायज्ञ कहा है? क्योंकि यहाँ अनेक आत्माओं की लगन की अग्नि का समूह है।

2 :- संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो सफलता के हैं, वह कम इमर्ज होते हैं। योग के बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जायेगा-यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं।

3 :- जितना ज्ञान धारणा में आता है वह संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफलता का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

4 :- तीन स्वरूप अर्थात् निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी। जैसे तीन सम्बन्धों में सत-बाप, सतशिक्षक और सखा की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो।

5 :- बापदादा से भी बच्चे शक्तिवान हैं क्योंकि वे सर्व शक्तिमान को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बने हैं। क्या वे ज्यादा शक्तिमान नहीं हैं?

=====

QUIZ ANSWERS

=====

प्रश्न 1 :- लाईट रूप और माईट रूप होते हुए भी क्यों नहीं कर पाते हो?
कारण क्या है?

उत्तर 1 :- बाबा ने बताया कि नॉलेज तुम्हारी बुद्धि तक है; समझ तक है। ठीक है- जानते हो, लेकिन नॉलेज को प्रैक्टिकल में लाना और समाना नहीं आता है।

① भोजन है, खाते भी हैं। परन्तु खाना अलग बात है, खाकर हजम करना अलग बात है। समाते नहीं हो, हजम नहीं होता, रस नहीं बनता और शक्ति नहीं मिलती। जीभ तक खा लिया तो रस नहीं बनेगा, शक्ति नहीं मिलती।

② समाने के बाद ही शक्ति का स्वरूप बनता है। समाया नहीं तो जीभ-रस है। समाया तो शक्ति है। सुनने का रस आया, समझ में आया, समझा किन्तु समाया नहीं, प्रैक्टिकल में नहीं लाया।

③ जितना धारणा में आता है, संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफलता का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

प्रश्न 2 :- देह-अभिमान, अलबेलापन वापिस क्यों लौट आता है, कारण क्या है? इसके संदर्भ में बापदादा ने क्या समझानी दी है ?

उत्तर 2 :- देह-अभिमान, अलबेलापन वापिस लौट आने के कारण प्रति बाबा ने समझानी दी है कि :-

① संकल्प करके जाते हो स्वाहा करने का, लेकिन संकल्प साथ-साथ(जैसे बीज बोते हो, बाद में सम्भाल करते हो)परन्तु इसमें जो सम्भाल चाहिए वह सम्भाल नहीं रखते हो।

② समय प्रमाण उनकी आवश्यकता रखनी चाहिए, आप बीज डाल कर अलबेले हो जाते हो। सोचते हो कि बाबा को दिया, अब बाबा जाने, यह बाबा का काम है। आप उसकी पालना नहीं करते हो। तो वाचा और मन्सा पर अटेन्शन चाहिए।

③ जैसे बीज को रोज-रोज पानी देना होता है, वैसे ही संकल्प रूपी बीज को रिवाइज करना है। उसमें कमी रह जाती है और आप निश्चिंत हो जाते हो-आराम पसंद हो जाते हो। आराम पसंद के संस्कार नहीं, मगर चिंतन का संकल्प होना चाहिए, एक-एक संस्कार की चिंता लगनी चाहिए।

प्रश्न 3 :-"मधुबन और राज-ऋषि" यह दो शब्द क्या सिद्ध करता है?

उत्तर 3 :- बाबा ने कहा कि :-

① जैसे मधुबन शब्द दो बातों को सिद्ध करता है-एक मधुरता को और बेहद की वैराग्य बृत्ति को, ऐसे ही राज-ऋषि शब्द है जिसका अर्थ है-राज्य करने वाले।

② तो राज-ऋषि हैं--वैगर टू प्रिन्स। जितना ही अधिकार उतना ही सर्वत्याग। सर्व त्यागी,अर्थात समय के ऊपर, संकल्प के ऊपर, स्वभाव और संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले।

③ जैसे चाहे वैसे अपने समय, वैसा अपना स्वरूप व स्थिति धारण कर सकें। ऐसे राज-ऋषि अर्थात सर्व अधिकारी और सर्व त्यागी बने हो? जन्म लेते ही कर्म-प्रमाण, श्रेष्ठ स्वमान-प्रमाण राज-ऋषि का मर्तबा (पद) बापदादा द्वारा प्राप्त हुआ ना?

प्रश्न 4 :- सफलतामूर्त बनने के लिये बापदादा ने क्या समझानी दी?

उत्तर 4 :-बाबा ने समझानी दी है कि सफलता मूर्त बनने के लिये वर्तमान समय-प्रमाण विशेष रूप से परखने की शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति होने से आने वाले विघ्नों को पहले से ही जान कर उसको समाप्त कर अपनी शक्ति को व्यर्थ होने से बचा सकेंगे, हर मनुष्य की आवश्यकता को परख उसको संतुष्ट रख सकेंगे, समय व वायुमण्डल को परख पुरुषार्थ की गति तीव्र रख सकेंगे, नॉलेजफुल, लॉफुल और लव फुल का संतुलन रख कर ही सफलता को प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्न 5 :- नॉलेजफुल का अर्थ क्या है?

उत्तर 5 :- बाबा ने बताया नॉलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नॉलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं? तो धोखा खाने की बात रहेगी? आँखे और वृत्ति धोखा नहीं खायेंगी जब आत्मा में नॉलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नॉलेज समा जाती है। जैसे भोजन से शक्ति भर जाती है तो शक्ति के आधार से काम होता है। अभी नॉलेज को समाना है।

FILL IN THE BLANKS:-

स्वाहा, परखने, वरदान, प्रकाश-स्वरूप, शक्ति, अग्नि, कर्म-बंधनो, परिवर्तन, सफल, लगन, कमजोरियां, व्यर्थ संकल्प, संस्कार

1 यहाँ आना अर्थात् _____ पाना, _____ करना।

वरदान / परिवर्तन

2 मधुबन में अपनी _____ की ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस _____ में सर्व _____, सर्व _____, व सब रहे हुए पुराने _____ भस्म हो जाएँ।

लगन / अग्नि / व्यर्थ संकल्प / कमजोरियां / संस्कार

3 जब सम्पूर्ण _____ नहीं तो सम्पूर्ण _____ नहीं।

स्वाहा / सफल

4 डबल लाइट अर्थात सर्व _____ से हल्के और लाइट अर्थात सदा _____ में स्थित रहने वाले।

कर्म-बंधनो / प्रकाश-स्वरूप

5 सफलतामूर्त बनने के लिये वर्तमान समय-प्रमाण विशेष रूप से _____ की _____ की आवश्यकता है।

परखने / शक्ति

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करे:-

1 :- मधुबन को क्यों महायज्ञ कहा है? क्योंकि यहाँ अनेक आत्माओं की लगन की अग्नि का समूह है। 【✓】

2 :- संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो सफलता के हैं, वह कम इमर्ज होते हैं। योग के बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जाएगा- यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं। 【✗】

संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो त्यागमूर्त के हैं, वह कम इमर्ज होते हैं। त्याग के बिना भाग्य नही बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जाएगा- यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं।

2 :- जितना ज्ञान धारण में आता है वह संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफलता का स्वरूप दिखाई पड़ता है। 【✓】

4 :- तीन स्वरूप अर्थात् निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी। जैसे तीन सम्बन्धों में सात-बाप, सत शिक्षक और सखा की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो। 【✕】

तीनों स्वरूप अर्थात् निराकार, आकार और साकार। जैसे तीन सम्बन्धों में सत-बाप, सतशिक्षक और सद्गुरु की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो।

5 :- बापदादा से भी बच्चे शक्तिवान हैं क्योंकि वे सर्व शक्तिमान को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बना हैं। क्या वे ज्यादा शक्तिमान नहीं हैं? 【✓】